जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

विषयों की आशा से भगवान की भक्ति करने वाला भगवान का भक्त नहीं भोगों का भिखारी है। - बिन्दु में सिंधु, पृष्ठ-16

वर्ष : 25, अंक : 17 **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये
दिसम्बर (प्रथम) 2002 **प्रबन्ध सम्पादक :** पण्डित संजीवकुमार गोधा वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

अष्टान्हिका पर्व सानन्द सम्पन्न

1. कोलकाता : यहाँ समाज के विशेष आग्रह पर अष्टान्हिका पर्व में अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रात: 47 शक्तियों पर तथा रात्रि में 'अपने को पहिचानिये' विषय पर मार्मिक प्रवचन हुये, जिसका समस्त समाज ने भरपूर लाभ लिया। सायंकालीन प्रवचन के पूर्व गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन तथा जिनेन्द्र भक्ति होती थी।

इस अवसर पर श्री अशोककुमारजी पाटनी परिवार द्वारा श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ़ एवं पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर ने सम्पन्न कराये ।

इस प्रसंग पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के 10,000 रुपयों के ऑडियो तथा सी.डी कैसिट्स तथा लगभग 25 हजार रुपयों का सत्साहित्य घर-घर पहुँचा।

2. उदयपुर (राज.) : यहाँ मुमुक्षु मण्डल, उदयपुर ने अष्टान्हिका पर्व में पंचमेरु नन्दीश्वर मण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रात: पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया के समयसार पर एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचन हुये। साथ ही पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित महावीरप्रसादजी टोकर, पण्डित राकेशजी शास्त्री परतापुर, पण्डित निलयजी शास्त्री टीकमगढ़, पण्डित संजीवकुमारजी शास्त्री खडैरी के प्रवचनों का लाभ भी समाज को मिला।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित प्रशांतजी शास्त्री मौ तथा पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री उगार (कर्नाटक) द्वारा सम्पन्न कराये गये।

पर्व के अन्तिम दिन श्री रूपमलजी पुत्रश्री रवीन्द्रकुमारजी गंगावत परिवार द्वारा जिनमंदिर पर ध्वजारोहण किया गया। **- प्रक्षाल जैन**

3. मुम्बई : प्रतिपर्वानुसार इस कार्तिक अष्टान्हिका पर्व के अवसर पर मुम्बई एवं उनके उपनगरों में अपूर्व धर्मप्रभावना हुई। मुम्बई (जौहरी बाजार) सीमंधर जिनालय में जबलपुर से पधारे पण्डित विरागजी शास्त्री के प्रवचनों के साथ ही श्री पंचमेरु नन्दीश्वर विधान का आयोजन किया गया।

इसी अवसर पर दादर में पण्डित कस्तूरचन्दजी विदिशा, मलाड़ में पण्डित मीठालालजी दोशी हिम्मतनगर एवं भायंदर में पण्डित गुलाबचन्दजी बीनावालों के आध्यात्मिक प्रवचनों का लाभ समाज को मिला। **- बीनूभाई शाह, मुम्बई**

4. अजमेर (राज.) : यहाँ दिनांक 12 से 19 नवम्बर 2002 तक गणधर वलय ऋषिमण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी, आगरा के दोनों समय प्रवचनों का लाभ उपस्थित समाज ने लिया। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित अनिलजी शास्त्री 'धवल' द्वारा सम्पन्न कराये गये। **- हीराचन्द बोहरा**

5. जयपुर (राज.) : टोडरमल स्मारक में महाविद्यालय परिवार द्वारा प्रतिदिन प्रात: सिद्धचक्र महामण्डल विधान किया गया। तथा रात्रि में पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील द्वारा सिद्धचक्र विधान की जयमाला का सरल शब्दों में सारगर्भित अर्थ समझाया गया।

डॉ. भारिल्ल : अहिंसा चैनल पर

कोलकाता : शीघ्र प्रारंभ होने जा रहे, अहिंसा चैनल पर जैन आगम के मनीषी विद्वान तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल एवं केन्द्रीय राज्यमंत्री माननीय तपन सिकदर की 'अहिंसा' विषय पर सारगर्भित वार्ता विगत दिनों रिकार्ड की गई। वार्ता का संयोजन साधना जैन द्वारा किया गया। स्मरण रहे कि इसीप्रकार की शाकाहार विषय पर भी वसुमति डागा के संयोजन में डॉ. भारिल्ल एवं कोलकाता विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त प्रोफेसर डॉ. बनर्जी की विशेष वार्ता रिकार्ड की गई थी। यह वार्तायें अतिशीघ्र अहिंसा चैनल के माध्यम से प्रसारित की जायेंगी।

ब्र. जतीशभाई द्वारा धर्म प्रभावना

देवलाली में दिनांक 6 से 9 नवम्बर 2002 तक धर्म प्रभावना हुई, जिसमें ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद के समयसार पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही पण्डित अनिलजी शास्त्री 'धवल' भोपाल तथा पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर द्वारा क्रमश: छहढाला पर कक्षा एवं बालकक्षा ली गई।

दिनांक 18 व 19 नवम्बर को प्रतापगढ़ में भी आप तीनों विद्वानों के विविध विषयों पर प्रवचन हुये। जिससे महती धर्मप्रभावना हुई।

प्रवेश फार्म शीघ्र भेजें

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ, परीक्षा बोर्ड, जयपुर की शीतकालीन परीक्षाओं की तिथियाँ 24, 25 व 27 जनवरी 2003 निश्चित की जा चुकी है। परीक्षा कार्यक्रम पृष्ठ-4 पर दिया गया है; जिन सम्बन्धित परीक्षा केन्द्रों ने अभी तक भी छात्र प्रवेश फार्म भरकर नहीं भेजे हैं, कृपया वे तत्काल भेज देवें।

- प्रबन्धक, परीक्षा विभाग, ए-4, बापूनगर, जयपुर

सम्पादकीय –

हरिवंशपुराण : एक अनुशीलन

19

– रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे .....)

तब नारद ने कहा ह्न हे पर्वत ! खोटा पक्ष लेकर स्वयं को दुःख की ज्वाला में जलाने का काम क्यों कर रहे हो ?

उत्तर में पर्वत ने कहा ह्न यदि तुम्हें अपने ज्ञान और धर्म का इतना ही अभिमान है तो कल राजा वसु की सभा में दूध का दूध और पानी का पानी हो जायेगा। तुम शास्त्रार्थ के लिए तैयार रहो।

वितण्डावाद बढ़ता देख नारद यह कहकर अपने घर चला गया कि ह्न पर्वत! मैं तुम्हें देखने आया था, देख लिया; तुम भ्रष्ट हो गये हो।

नारद के चले जाने पर पर्वत इस बात से चिन्तित हो गया कि ह्न कहीं ऐसा न हो कि राजा वसु नारद के पक्ष में निर्णय दे दें। अतः वह माता के पास गया और नारद से हुई सारी बात कह सुनाई।

पर्वत की बात सुनकर उसकी माँ का हृदय बहुत दुःखी हुआ। उसने पहले तो पर्वत की बहुत निन्दा की। उसके मुँह से बार-बार यही निकल रहा था कि 'हे पर्वत! तेरा कहना सही नहीं है। हे पुत्र! नारद का कहना ही सही है। यही तेरे पिता जी ने कहा था। समस्त शास्त्रों के पूर्वापर संदर्भ के ज्ञान से जिनकी बुद्धि अत्यन्त निर्मल थी, ऐसे तेरे पिता ने जो कहा था, वही नारद कह रहा है।' इसप्रकार पर्वत से कहकर भी पुत्रानुराग वश राजा वसु के पास गई। पढ़ते समय की धरोहर रूप रखी हुई गुरु दक्षिणा का स्मरण दिलाते हुए वसु से सब वृतान्त सुनाकर कहने लगी कि ह्न 'यद्यपि नारद का कथन ही सत्य है, परन्तु तुम्हें पर्वत के जीवन की रक्षा हेतु पर्वत का ही समर्थन करना है और नारद की बात को मिथ्या बताना है।' स्वस्तिमती द्वारा राजा वसु को गुरु दक्षिणा स्मरण कराने से वसु को उसकी बात मानने को बाध्य होना पड़ा।

तत्पश्चात् अगले दिन जब राजा वसु सभासदों और आम जनता के साथ राजसभा में स्फटिक के सिंहासन पर बैठा था, तब पर्वत एवं नारद ने राजसभा में प्रवेश किया। अन्तरीक्ष सिंहासन पर स्थित राजा वसु को अभिवादनपूर्वक आशीर्वाद देकर नारद एवं पर्वत अपने-अपने सहायकों के साथ यथायोग्य स्थानों पर बैठ गये। वहाँ अनेक जटाधारी तापसी और विद्वान पण्डित भी उपस्थित थे।

जब सब विद्वान यथास्थान यथायोग्य आसनों पर बैठ गये तब जो ज्ञान और अवस्था में वृद्ध थे, उन्होंने राजा वसु से निवेदन किया कि ह्न 'हे राजन! ये नारद और पर्वत किसी विसंवाद को सुलझाने के लिए आपके पास आये हैं। आप न्यायमार्ग के वेत्ता हैं, इसलिए आपकी अध्यक्षता में इन सब विद्वानों के बीच ये दोनों आपसे 'दूध का दूध और पानी का पानी' की नीति के अनुसार न्याय प्राप्त करने आये हैं। वृद्धजनों के कहने पर राजा वसु ने पर्वत को पूर्वपक्ष रखने के लिए अवसर दिया। अपना पूर्वपक्ष रखते हुए पर्वत ने कहा ह्न 'स्वर्ग के इच्छुक मनुष्यों को अजों द्वारा यज्ञ की विधि करनी चाहिए' यह एक श्रुति है, इसमें जो 'अज' शब्द है, उसका अर्थ चार पैर वाला जन्तु विशेष (बकरा) है। 'अज' शब्द न केवल वेद में ही पशु वाचक है, बल्कि लोक में भी पशुवाचक ही है। पर्वत ने अपनी बात की पुष्टि में आगे कहा ह्न हमें यह आशंका नहीं करना चाहिए कि ह्न घात करते समय पशु को दुःख होता होगा; क्योंकि मंत्रों के प्रभाव से उसकी मृत्यु सुख से होती है। उसे नाममात्र भी दुःख नहीं होता। दीक्षा के अन्त में मंत्रों का उच्चारण होते ही पशु को सुखमय स्थान साक्षात् दिखाई देने लगता है; क्योंकि मणि मंत्र-तंत्र और औषधियों का प्रभाव अचिन्त्य होता है।

एक बात यह भी तो है कि ह्न अत्यन्त सूक्ष्म आत्मा न तो अग्नि में जलती है, न पानी में गलती है, न हवा में उड़ती है और न अस्त्र-शस्त्रों से कटती है। तथा याज्ञिक लोग यज्ञ में पशु का घात करके उसके चक्षुओं को सूर्य के पास कानों को वायु के पास, खून को जल के पास और शरीर की वायु पृथ्वी के पास भेज देते हैं। इस तरह याज्ञिक उसे सुख ही देते हैं न कि कष्ट।' इत्यादि तर्कों से पर्वत ने अपना पूर्वपक्ष प्रस्तुत किया।

उत्तर पक्ष प्रस्तुत करके पशुवध के विरुद्ध बोलते हुए नारद ने कहा ह्न हे सज्जनों! और हे राजन! सावधान होकर आप लोग मेरी बात सुनिए! मैं पर्वत के द्वारा प्रस्तुत ह्न आधारहीन पूर्वपक्ष के कुतर्कों का निराकरण आगम एवं युक्तियों से करता हूँ।

'अजैर्यष्टव्यं' इत्यादि वाक्य में पर्वत ने जो भी कहा है, वह बिल्कुल असत्य है, क्योंकि मूलतः अज का अर्थ जो पशु किया, वह असत्य है। यह कोरी मनगढ़न्त कल्पना है, वेद में शब्दार्थ की व्यवस्था अपने अभिप्राय से नहीं होती; किन्तु वह वेदाध्ययन के समान गुरुओं के उपदेश की अपेक्षा रखती है। अतः गुरुओं की पूर्व परम्परा से शब्दों के अर्थ का निश्चय करना चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि ह्न यदि अध्ययन गुरु परम्परा की अपेक्षा रखता है तो अर्थज्ञान भी गुरु परम्परा की अपेक्षा रखेगा ह्न यह न्याय सिद्ध बात है।

शब्दों के अर्थ में जो प्रवृत्ति है, वह या तो रूढि से होती है या गुरु के बताये अनुसार ह्न क्रिया के आधीन होती है; परन्तु जिनके हृदय में गुरु का उपदेश चिरकाल तक स्थिर नहीं रहता। वे गुरु के द्वारा प्रतिपादित अर्थ को भूल जाते हैं। वस्तुतः 'अजैर्यष्टव्यं' इस वेद वाक्य में 'अज' शब्द का अर्थ रूढ़िगत अर्थ से दूर 'न जायन्ते इति अजः' अर्थात् जो उत्पन्न न हो सके वे अज हैं। इस व्युत्पत्ति से क्रिया सम्मत 'तीन वर्ष पुराना धान्य' गुरु द्वारा बताया गया है। यद्यपि प्रसंगानुसार 'अज' शब्द का अर्थ बकरा भी होता है; परन्तु यहाँ इस प्रसंग में 'अज' शब्द का अर्थ ह्न पृथ्वी, खाद-पानी आदि के रहते हुए भी जिस धान्य में अंकुर आदि रूप पर्याय प्रगट न हों सके ऐसा तीन वर्ष पुराना धान 'अज' कहलाता है। ऐसे धान से यज्ञ करना चाहिए ह्न यह 'अजैर्यष्टव्यम्' इस वाक्य का अर्थ है। **(क्रमशः)**

कहान-संदेश

धर्मी की मंगल भावना

2

अहो ! मैं ही तीर्थंकर हूँ, मैं ही जिनवर हूँ, मुझमें ही जिनेश्वर होने के बीज पड़े हैं। परमात्मा का इतना उल्लास कि मानो परमात्मा से मिलने जा रहा हो। परमात्मा बुलाते हों कि आओ ! आओ ! चैतन्यधाम में आओ। अहा ! चैतन्य का इतना आह्लाद और प्रह्लाद होता है, चैतन्य में अकेला आह्लाद ही भरा है। उसकी महिमा, माहात्म्य, उल्लास, उमंग असंख्य प्रदेशों से आना चाहिये।

अरे जीव ! दूसरा सब भूल जा और अपनी निज शक्ति को संभाल ! पर्याय में संसार है, विकार है; वह भूल जा और निजशक्ति के सन्मुख देख तो, उसमें संसार है ही नहीं। चैतन्य शक्ति में संसार था ही नहीं, है ही नहीं और होगा भी नहीं। लो, यह मोक्ष ! ऐसे स्वभाव की दृष्टि करे तो आत्मा मुक्त ही है। इसलिये एक बार अन्य सब लक्ष्य में से छोड़ दे और ऐसे चिदानन्द स्वभाव में लक्ष्य को एकाग्र कर तो तुझे मोक्ष की शंका नहीं रहेगी। अल्पकाल में अवश्य मुक्ति प्राप्त करेगा।

ध्रुव के ध्येय की धुन सो धर्म। निहालभाई को ध्रुव का ही महत्त्व आया था। उन्होंने पर्याय को एकदम गौण करके सब बात कही है। बात झूठी नहीं, सच्ची है। 'ववहारो अभूदत्थो' जो समयसार में कहा है वही बात है। अध्यात्म के जोर से उन्होंने पर्यायमात्र को कह दिया है; क्योंकि ध्रुव में पर्याय नहीं है न !

मैं सिद्ध समान ही हूँ, तथा अरहंत समान ही हूँ – ऐसे विश्वास में शुद्ध अस्तित्त्व का जोर है। जैसे अरिहंत सिद्ध हैं, वैसा ही मैं हूँ – इसप्रकार दो की समानता में शुद्ध-अस्तित्व के विश्वास का बल है।

मैं ज्ञायक हूँ .. ज्ञायक हूँ .. ज्ञायक हूँ – ऐसा रटन अन्तर में रखना, ज्ञायक के सन्मुख ढलना, ज्ञायक के सन्मुख एकाग्रता करना। अहाहा ! उस पर्याय को ज्ञायकोन्मुख करना अति कठिन है, उसके लिये अनन्त पुरुषार्थ की आवश्यकता है। ज्ञायक तल में पर्याय पहुँच गई .. अहाहा ! उसकी तो क्या बात है। ऐसा पूर्णानन्द प्रभु ! उसकी प्रतीति में, उसके विश्वास में, भरोसे में – आना चाहिये कि अहा ! एक समय की पर्याय के पीछे इतना बड़ा भगवान मैं ही हूँ।

सिद्ध भगवान में जैसी सर्वज्ञता, जैसी प्रभुता, जैसा अतीन्द्रिय आनन्द तथा जैसा आत्मवीर्य है; वैसी ही सर्वज्ञता, प्रभुता, आनन्द और वीर्य की शक्ति तेरे आत्मा में भी भरी ही है। भाई ! एक बार हर्षित तो हो कि अहो! मेरा आत्मा ऐसा परमात्मस्वरूप है, ज्ञानानन्द की शक्ति से भरा है, मेरे आत्मा की शक्ति का घात नहीं हुआ है। अरे रे ! मैं हीन हो गया, विकारी हो गया अब मेरा क्या होगा ह्न ऐसे डर मत, उलझन में न पड़, हताश न हो... एक बार स्वभाव की महिमा लाकर अपनी शक्ति को स्फुरित कर !

जैसा सिद्धालय है वैसे ही देहालय है। देह देवालय में अखण्ड आनन्दरस की पोर पूर्णानन्द से भरपूर भगवान विराजमान है। सिद्धदशा तो एक समय की पर्याय है और सिद्धस्वभाव ऐसी अनंत पर्यायों का पिण्ड है। उस देह देवालय में स्थित सिद्धस्वभाव का ध्यान करने योग्य है। वंदन-स्तुति करने योग्य जो गणधरादि देव हैं; वे भी जिसका वंदन-स्तवनादि करते हैं ऐसे शुद्धात्मा का हे प्रभाकर भट्ट! तू ध्यान कर ! सिद्ध परमात्मा और देह में स्थित अपने आत्मा में भेद न कर।

सिद्धनगर में जो अनंत सिद्ध विराजते हैं। उन्होंने संसार अवस्था में प्रथम बाह्य से दृष्टि हटा कर अन्तर का विस्तार किया था। तू भी अपने उपयोग को बाहर से समेट ले। मैं तो पूर्ण अभेद परमात्मा ही हूँ, मुझमें और परमात्मा में कोई अन्तर नहीं है ह्न इसप्रकार अंतर निकाल देनेवाले का अंतर मिट जायेगा।

जिसने सर्वज्ञ को अपनी पर्याय में स्थापित किया, उसे अब कुछ करना बाकी रहा ही नहीं। जैसे सर्वज्ञ ज्ञाता हैं, वैसे ही उनको अपने में स्थापित करने वाला भी जो होता है, उसका मात्र ज्ञाता ही है। फेरफार करने की बात ही नहीं है। द्रव्य सर्वज्ञस्वभावी है। उन सर्वज्ञ को जिसने अपनी पर्याय में स्थापित किया, उसे सर्वज्ञ होने का निर्णय आ गया। बस वह 'ज्ञ' स्वभाव में स्थिरता करते-करते पर्याय में सर्वज्ञ हो जायेगा। अन्य कुछ करना रहा ही नहीं।

शरीर, राग तो आत्मा नहीं है; किन्तु एक समय की शुद्ध पर्याय-क्षायिक पर्याय भी आत्मा नहीं है। वास्तव में तो त्रैकालिक ध्रुवस्वभाव परमपारिणामिक भाव ही आत्मा है। संवर-निर्जरा-मोक्ष पर्याय भी आत्मा नहीं है, उपादेय नहीं है, उपादेय तो कारणपरमात्मा ही है।

भाई ! तूने पंचमकाल में भरतक्षेत्र में और निर्धन परिवार में जन्म लिया है, इसलिये हमारी आजीविका आदि का क्या होगा? ऐसा विचार न कर! तू वर्तमान में और जब देख तब सिद्ध समान ही है, जिस क्षेत्र में और जिस काल में जब देखे तब तू सिद्ध समान ही है। भाई, संसारी और सिद्ध तो पर्याय की अपेक्षा से हैं, स्वभावतः तो यह संसारी जीव भी सिद्ध समान शुद्ध ही हैं।

अहा ! प्रभु तू पूर्ण है, तेरे प्रभुत्व आदि समस्त गुण पूर्ण है। तेरी शक्ति की क्या बात करें ? तू किसी भी गुण में अधूरा नहीं है। परिपूर्ण है। तुझे किसका आधार चाहिये ? अहाहा ! ऐसी धुन लगना चाहिये। प्रथम तो ऐसे स्वभाव का विश्वास आना चाहिये। पश्चात् दृष्टि और अनुभव होता है।

जिसे दुःख का नाश करना है उसे प्रथम क्या करना? – तो कहते हैं कि पर की ओर के विकल्प छोड़कर, रागका प्रेम तोड़कर, मति को अंतर्मुख करना। बारम्बार बुद्धिपूर्वक स्वोन्मुख होना। पूर्ण ज्ञानानन्द भगवान आत्मा में पुनः पुनः मति-श्रुति को लगाना; उससे भ्रान्ति का नाश होगा, भ्रान्तिगत अज्ञान दशा का नाश होगा, मिथ्यात्व का नाश होगा – जो कि दुःख का मूल है।

'परमात्मप्रकाश' की 68वीं गाथा तो मक्खन है, उसमें अमृत भरा है, जीव की गजब व्याख्या की है। जिनेश्वरदेव ने जीव की व्याख्या की है कि ह्न उत्पाद-व्यय रहित, बंध-मोक्ष की पर्याय एवं बंध-मोक्ष के कारण रहित वह जीव है। शुद्ध निश्चय से भगवान आत्मा नित्यानन्द ध्रुव है, वह जन्मता नहीं है। अर्थात् उत्पाद की पर्याय में नहीं आता, मरता नहीं है अर्थात् व्यय में नहीं आता। एकेन्द्रिय की पर्याय हो या सिद्ध की पर्याय हो, ध्रुव भगवान तो सदा त्रैकालिक ज्ञानानन्द की मूर्तिस्वरूप ही रहा है।

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड
श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

शीतकालीन परीक्षा कार्यक्रम सत्र-2002-03

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
शुक्रवार 24 जनवरी 2002	1. बालबोध पाठमाला भाग1 (बा.प्रथम खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग 1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग1(प्रवेशिका प्रथम खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (बरैयाजी) 9. विशारद द्वितीय खण्ड (प्रथम वर्ष)
शनिवार 25 जनवरी 2002	1. बालबोध पाठमाला भाग 2 (बा.द्वितीय खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग 2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 2(प्रवेशिका द्वितीय खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग 2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद प्रथम खण्ड (प्रथम वर्ष) 10. विशारद द्वितीय खण्ड (द्वितीय वर्ष)
सोमवार 27 जनवरी 2002	1. बालबोध पाठमाला भाग 3 (बा.तृतीय खण्ड) मौखिक 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 3 (प्रवेशिका तृतीय खण्ड) 3. रत्नकरण्डश्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद प्रथम खण्ड (द्वितीय वर्ष)

नोट -

(1) सुविधानुसार परीक्षा का समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक के बीच में कभी भी सैट किया जा सकता है।

(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।

(3) यदि किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।

(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक में लेवें।
शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

तीर्थयात्रा का सफल आयोजन

दिनांक 29 अक्टूबर से 10 नवम्बर तक ब्र. यशपालजी जयपुर के सान्निध्य में उत्कर्ष मुमुक्षु मण्डल मल्हाण (मुम्बई) के सदस्यों द्वारा एक सफल तीर्थयात्रा का आयोजन किया गया। तीर्थयात्रा में मुमुक्षु मण्डल के 25 सदस्यों ने भक्तिभावपूर्वक सम्मेदशिखरजी एवं अन्य तीर्थक्षेत्रों की वंदना की। यात्रा के मध्य अनेक स्थानों पर ब्र.यशपालजी के प्रवचन एवं तत्त्वचर्चा के माध्यम से तीर्थवंदना के वास्तविक महत्त्व को सका लाभ मिला। इसी बीच राजगृही में पण्डित जागेशजी शास्त्री जबेरावालों के दोनों समय प्रवचन का लाभ भी मिला।

शिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

मुम्बई : यहाँ मुमुक्षु मण्डल भायंदर की ओर से प्रथम आध्यात्मिक शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में प्रतिदिन पण्डित शैलेशभाई शाह, पण्डित रजनीभाई दोशी एवं पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया के क्रमशः निमित्त-उपादान, छहढाला, नियमसार पर प्रवचन हुये। पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर द्वारा बालकक्षा ली गई। शिविर में लगभग 200 बच्चों ने भाग लिया।

राज. एवं म.प्र. की पाठशालाओं का निरीक्षण सम्पन्न

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महा., जयपुर के छात्र विद्वान पण्डित मनोजकुमारजी शास्त्री एवं पण्डित राजेन्द्रजी खड़ैरी द्वारा रावतभाटा, बिजौलिया, लाम्बाखोह, प्रतापगढ़, लकडवास, लूणदा, कूण, भिण्डर, बल्लभनगर, कुरावड, साकरोदा, जगत, केशवनगर, नेमिनगर एवं हिरणमगरी की पाठशालाओं का निरीक्षण किया गया।

पण्डित संजीवजी शास्त्री एवं पण्डित मनीषजी खड़ैरी द्वारा मुगावली, खनियांधाना, रन्नौद, बदरवास, लुकवासा, कोलारस, शिवपुरी, पोहरी, नरवर एवं झांसी की पाठशालाओं का निरीक्षण किया गया।

निरीक्षण के दौरान सभी स्थानों पर यथासंभव प्रातः, दोपहर एवं सायंकाल बालकक्षा, प्रौढकक्षा तथा प्रवचनों का आयोजन किया गया। कुछ स्थानों पर विधान आदि के द्वारा समाज में महत्ती धर्म प्रभावना हुई। विद्वानों ने समाज को पाठशाला संचालन के लिए यथायोग्य निर्देश दिए।

एक नई शुरुआत

शाहगढ़ (म.प्र.) : यहाँ वीर निर्वाण महोत्सव की पावन प्रसंग पर स्थानीय विद्वान श्री राजेश जैन शास्त्री का मार्मिक प्रवचन हुआ।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के सदस्यों के अत्यधिक उत्साह को देखते हुए, उनके लिए भी एक रात्रिकालीन कक्षा का आयोजन किया गया, जिसमें नियमित रूप से 30-40 युवा भाई-बहिन धर्म चर्चा करते हैं। यहाँ बच्चों की पाठशाला तो नियमित रूप से चलती ही है।

प्रवचनों का आयोजन

जयपुर (राज.) : यहाँ कमलानेहरु नगर में दिनांक 13 से 20 नवम्बर 2002 तक प्रतिदिन रात्रि में पण्डित प्रवीणजी शास्त्री रायपुर, पण्डित ऋषिराजजी शास्त्री बरां तथा पण्डित आशीषजी शास्त्री जबेरा के बारह भावना विषय पर सारगर्भित प्रवचन हुये।

जैनपथ प्रदर्शक प्रतियोगिता - 2 व 3

जैनपथप्रदर्शक के अंक सितम्बर (द्वितीय) एवं अक्टूबर (द्वितीय) में प्रकाशित जैनपथप्रदर्शक प्रतियोगिता - 2 व 3 के सही जवाब यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं। इन प्रतियोगिताओं के अनेक सही उत्तर हमें प्राप्त हुये हैं । अत: ड्रॉ पद्दति से पुरस्कार विजेताओं का चयन किया गया है। विजेताओं के नाम भी यहाँ दिये जा रहे हैं।

सितम्बर (द्वितीय) में प्रकाशित प्रतियोगिता-2 का सही हल -

उत्तर 1. शांतिनाथ पुराण के रचयिता महाकवि असगजी हैं।
उत्तर 2. कषाय पाहुड के कर्त्ता गुणधर आचार्य हैं, ज्ञातव्य है कि आचार्य यतिवृषभ के इसग्रन्थ पर चूर्णिसूत्र का नाम भी कषाय पाहुड ही है।
उत्तर 3. अकलंकदेव का अष्टशती द्रव्यानुयोग का ग्रन्थ है।
उत्तर 4. न्याय दीपिका के रचनाकार अभिनव धर्मभूषण यति हैं।
उत्तर 5. माणिक्यनन्दी मुनि ने परीक्षामुख नामक न्याय शास्त्र लिखा है।
उत्तर 6. गणितसार संग्रह महावीराचार्य की रचना है।
उत्तर 7. हाँ ! दशभक्ति नामक ग्रन्थ आचार्य कुन्दकुन्द की रचना है।
उत्तर 8. चन्द्रगुप्त मुनि को वन में देवताओं ने आहार दिया था।
उत्तर 9. बल ऋद्धि से कैलाश पर्वत को बालिमुनि ने दबाया था।
उत्तर 10. ज्ञानार्णव के रचियता शुभचन्द्राचार्य हैं ।

इस प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार कुमारी प्रशांत उमाठे जैन कामठी-नागपुर ने तथा द्वितीय पुरस्कार - (1) कान्तिलाल जैन रायपुर एवं (2) श्रीमती अनुकम्पा जैन पत्नी श्री यतीन्द्रकुमार जैन उदयपुर ने प्राप्त किया। विजेताओं को पुरस्कार श्यामलालजी टिमरूवा, अहमदाबाद की ओर से दिया जा रहा है।

अक्टूबर (द्वितीय) में प्रकाशित प्रतियोगिता-3 का सही हल -

उत्तर 1. विदेह क्षेत्र में 20 तीर्थंकर विद्यमान हैं ।
उत्तर 2. णमोकार मंत्र से 84 लाख मंत्रों की उत्पत्ति हुई है।
उत्तर 3. अस्तिकाय 5 होते हैं ।
उत्तर 4. वर्तमान चौबीसी के तीन तीर्थंकरों पर उपसर्ग हुआ।
उत्तर 5. 21 तीर्थंकर खड्गासन से मोक्ष गये हैं ।
उत्तर 6. इक्ष्वाकुवंश में आठ तीर्थंकरों का जन्म हुआ।
उत्तर 7. परिषह 22 होते हैं ।
उत्तर 8. सन् 2001 में महावीर निर्वाणोत्सव 15 नवम्बर गुरुवार को था।
उत्तर 9. नामकर्म की 93 प्रकृतियाँ हैं ।
उत्तर 10. पं. टोडरमलजी का जन्म विक्रम सं. 1776-77 में हुआ था।

इस प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार श्रीमती भारती भोरावत पत्नी श्री मनोहर भोरावत उदयपुर ने तथा द्वितीय पुरस्कार - (1) मुन्नी मित्तल केकड़ी (2) सुशीला पाटोदी रतलाम ने प्राप्त किया। विजेताओं को पुरस्कार श्रीमती विमलाजी छाबड़ा जयपुर की ओर से दिया जा रहा है ।

- संयोजक, सीमा जैन उदयपुर

पू. गुरुदेवश्री की पुण्यतिथि पर विचार गोष्ठी सम्पन्न

जयपुर : यहाँ पण्डित टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 24 नवम्बर को पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की पुण्य तिथि पर उनके स्मरणार्थ 'पूज्य कानजीस्वामी का जीवन परिचय' नामक एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी में श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने पूज्य गुरुदेव के सम्पूर्ण जीवन एवं उनके द्वारा प्रतिपादित जिनागम के महत्त्वपूर्ण विषयों पर अपने विचार व्यक्त किये।

समारोह की अध्यक्षता करते हुये महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि - स्वामीजी ने द्रव्यानुयोग की संगति तीनों अनुयोगों के साथ मिलाकर अध्यात्म को सम्पूर्ण जैन समाज के सामने प्रस्तुत किया।

मुख्यअतिथि के रूप में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने बताया कि आज से 112 वर्ष पूर्व जिन विषम परिस्थितियों में स्वामीजी ने आचार्यों के ग्रन्थों को पढ़कर उनके भावों को जिस गहराई के साथ प्रस्तुत किया, वह अनुकरणीय है। हमारी आज की परिस्थितियाँ तो उसकी अपेक्षा से अत्यन्त सुलभ एवं अनुकूल है। अत: उनके जीवन से प्रेरणा लेते हुये हमें उग्र पुरुषार्थ के माध्यम से आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त करना चाहिये।

इस अवसर पर श्री हुकमचन्दजी जैन, चेन्नई ने भी अपने विचार व्यक्त किये। अन्त में गुरुदेवश्री के सम्पूर्ण जीवन परिचय से सम्बन्धित काव्यात्मक रचनायें प्रस्तुत की गईं।

सभा का संचालन पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री रायपुर ने तथा संयोजन पण्डित जितेन्द्रकुमारजी राठी ने किया।

अन्त में पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने आभार व्यक्त किया।

वैराग्य समाचार

1. टीकमगढ़ मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट के अध्यक्ष पण्डित हेमचन्दजी टीकमगढ़का 57 वर्ष की आयु में दिनांक 16 अक्टूबर को आकस्मिक देहावसान हो गया है। आप अनेक वर्षों से पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर के निर्देशन में प्रतिवर्ष दशलक्षण पर्व पर प्रवचनार्थ जाया करते थे। आपके चिरवियोग से मुमुक्षु समाज को अपूरणीय क्षति हुई है।

2. टीकमगढ़ निवासी चौ. सनतकुमारजी का दिनांक 18 अक्टूबर को देहावसान हो जाने से टीकमगढ़ मुमुक्षु मण्डल को एक और अपूरणीय क्षति का सामना करना पड़ा है। आपने पाठशाला एवं स्वाध्याय के लिये स्थान प्रदान कर समाज को बहुत योगदान दिया है।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

धर्म प्रभावना

जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ मुमुक्षु मण्डल के आमंत्रण पर दिनांक 30 अक्टूबर से 9 नवम्बर तक विदुषी ब्र. विमलाबेन के प्रात: ज्ञानानन्द श्रावकाचार पर तथा रात्रि में विदेहक्षेत्र के वज्रदन्त चक्रवर्ती के बारह मासा विषय पर मार्मिक प्रवचन हुये।

तत्वचर्चा

समयसार का सार

58

गतांक से आगे

– डॉ॰ हुकमचन्द भारिल्ल

कौन से कर्म की, किन भावों से, किस गुणस्थान में कितनी–क्या निर्जरा होती है; इसका विस्तार से वर्णन करणानुयोग के शास्त्रों में मिलेगा।

समयसार के निर्जराधिकार का तो आरम्भ ही यहाँ से होता है कि सम्यग्दृष्टि ज्ञानी जीव के भोगों के संयोग होने पर भी निर्जरा होती है।

यहाँ सम्पूर्ण कथन चतुर्थ–पंचम गुणस्थानवर्ती सम्यग्दृष्टियों की दृष्टि से है। चतुर्थ–पंचमगुणस्थानवर्ती सम्यग्दृष्टि की कैसी परिणति होती है; इसी का विस्तार इस अधिकार में है। यद्यपि सिद्ध भगवान भी सम्यग्दृष्टि हैं; लेकिन यहाँ उनकी अपेक्षा नहीं है; क्योंकि उनके निर्जरा है ही नहीं, उनको तो मोक्ष ही हो गया है। निर्जरा अर्थात् खिरना; खिरने के लिए उनके पास कुछ कर्म हैं ही नहीं; अतः उनको निर्जरा भी नहीं है। उनके कुछ अशुद्धता रही ही नहीं, उनके तो पूर्ण शुद्धता प्रगट हो गई है; अतः उनके भावनिर्जरा भी नहीं है। वे सम्यग्दृष्टि हैं, ज्ञानवंत हैं; तथापि उन्हें यहाँ नहीं लेना है।

निर्जराधिकार का मुख्य प्रतिपाद्य बिन्दु सम्यग्दृष्टि के भोगों के विद्यमान होने पर भी निर्जरा होती है – यह समझाना है।

ग्यानवंत कौ भोग निरजरा हेतु है।
अज्ञानी कौ भोग बंध फल देतु है।।
यह अचरज की बात हिए नहि आवही।
पूछै कोऊ सिष्य गुरु समझावही।।

नाटक समयसार में समागत उक्त छन्द में शिष्य के प्रश्न के माध्यम से निर्जराधिकार की विषयवस्तु की ओर संकेत किया गया है।

शिष्य प्रश्न करता है कि हे गुरुदेव ! आप कहते हैं ज्ञानवंत के भोग निर्जरा के हेतु हैं; किन्तु ज्ञानवंत तो केवली, सिद्ध भगवान भी हैं; उनके भोग निर्जरा के कारण हैं – यह कैसे हो सकता है; क्योंकि उनके तो भोग विद्यमान ही नहीं है। मुनिराज के भी भोग नहीं है; उनके आहार, विहारादिक की जो क्रियाएँ पाई जाती है; उन्हें भी जगत में भोग नहीं कहा जाता है; अतः छठवें–सातवें गुणस्थानवर्ती मुनिराजों के भी भोग विद्यमान नहीं है। अब चतुर्थ–पंचमगुणस्थानवर्ती श्रावक ही शेष हैं और उनके भोग भी विद्यमान हैं। अतः जहाँ जितने भोग हैं, वहाँ उतना कर्मबंध होना चाहिए।

चतुर्थगुणस्थानवर्ती ज्ञानवंत के भोग निर्जरा हेतु हैं एवं अज्ञानी के वही भोग कर्मबंध के हेतु हैं – यह आश्चर्य की बात है।

यद्यपि शिष्य यहाँ कहना तो यह चाहता है कि ऐसे पक्षपात की बात हमारे समझ में नहीं आती है; तथापि मात्र आश्चर्य की बात कहकर ही अपने मन को संतोष कर लेता है। आगम का कथन है; इसलिए 'असत्य है' – ऐसा तो नहीं कह सकते; फिर भी आश्चर्य होता है – ऐसा कहकर शिष्य अपना भाव प्रगट कर देता है।

शिष्य कहता है कि आप तो आचार्य हैं, महान हैं; अतः आप जो कहो सो कहो; लेकिन मेरे हृदय में यह बात नहीं बैठ रही है; आश्चर्य व्यक्त करने के अतिरिक्त मैं कर भी क्या सकता हूँ? इसप्रकार आश्चर्य शब्द के माध्यम से शिष्य अपने अंतर का तीव्र असंतोष प्रगट करता है।

इस शंका के समाधान में ही निर्जराधिकार लिखा गया है।

यद्यपि पहली गाथा के शीर्षक में आचार्यदेव 'अब द्रव्यनिर्जरा का स्वरूप कहते हैं' ऐसा लिखते हैं; तथापि गाथा में जो बात आई है; वह एकदम अलग है, अद्भुत है।

उवभोगमिंदियेहिं दव्वाणमचेदणाणमिदराणं।
जं कुणदि सम्मदिट्ठी तं सव्वं णिज्जरणिमित्तं।।193।।

सम्यग्दृष्टि जीव इन्द्रियों के द्वारा चेतन–अचेतन द्रव्यों का जो भी उपभोग करता है, वह सभी निर्जरा का निमित्त है।

इसमें चेतन द्रव्यों में स्त्री आदि और अचेतन द्रव्यों में मकान आदि का भोग–उपभोग समाहित करना। इसप्रकार जो सम्यग्दृष्टि भोग भोगते हैं; वे सब भोग उसके द्रव्यकर्म खिरने में निमित्त होते हैं; यही द्रव्यनिर्जरा का स्वरूप है।

'अब भावनिर्जरा का स्वरूप कहते' इस शीर्षक पूर्वक आचार्य अगली गाथा लिखते हैं –

दव्वे उवभुंजंते णियमा जायदि सुहं व दुक्खं वा।
तं सुहदुक्खमुदिण्णं वेददि अध णिज्जरं जादि।।194।।

परद्रव्य के उपभोग होने पर सुख अथवा दुःख नियम से उत्पन्न होता है। उदय को प्राप्त उन सुख–दुःखों का अनुभव होने के बाद वे सुख–दुःख निर्जरा को प्राप्त हो जाते हैं।

द्रव्यकर्म के उदय से ज्ञानी–अज्ञानी दोनों को नियम से लौकिक सुख–दुःख होता है। साता वेदनीय का उदय हो तो अनुकूलता का वेदन होता है और असाता वेदनीय का उदय हो तो प्रतिकूलता का वेदन होता है।

सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि दोनों को एक जैसा ही वेदन होता है; पाप के उदय में प्रतिकूलता का वेदन मिथ्यादृष्टि को भी होगा एवं सम्यग्दृष्टि को भी होगा। पुण्य के उदय में अनुकूलता का वेदन सम्यग्दृष्टि को और मिथ्यादृष्टि को समान होगा। यदि अपशब्द कहेंगे तो सम्यग्दृष्टि को भी बुरा लगेगा एवं मिथ्यादृष्टि को भी; यदि प्रशंसा करेंगे तो दोनों को अच्छा लगेगा। दोनों को निंदा में दुःख एवं प्रशंसा में सुख होगा।

दोनों को सुख–दुःख होगा एवं उदय के अनुसार वह

आएगा एवं अपने समय पर चला जाएगा। हमें पुत्रवियोग या पत्नीवियोग हो जाता है तो क्या हम जीवनभर दुःख मनाते हैं? हमारा दुःख धीरे–धीरे कुछ काल पश्चात् कम हो जाता है। जो सुख–दुःख होता, वह अनिवार्य रूप से समय पर समाप्त भी हो जाता है; उसकी अपनी कालमर्यादा है। आचार्य कहते हैं कि वे सुख–दुःख अपनी कालमर्यादा खत्म होते ही नाश को प्राप्त हो जाते हैं।

हम कहते भी हैं कि इसे अच्छी तरह से रो लेने दो, हृदय हल्का हो जाएगा; क्योंकि वह दुःख निकल जाएगा, यदि दुख नहीं निकला तो परेशान करेगा।

ऐसे ही यहाँ आचार्य कहते हैं कि सुख–दुःख वेदन के बाद स्वयमेव ही झर जाएगा – यही भावनिर्जरा है।

भोगने के पश्चात् सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि दोनों के कर्म खिर जाएंगे। इस अर्थ में सम्यग्दृष्टि के द्रव्यनिर्जरा भी होती है।

यदि ऐसा है तो, मिथ्यादृष्टि को भी निर्जरा होती है – ऐसा कहना चाहिए। मात्र सम्यग्दृष्टि को ही निर्जरा होती है, मिथ्यादृष्टि को नहीं – ऐसा क्यों है ?

इसका समाधान यह है कि मिथ्यादृष्टि के जितने कर्म खिरते हैं, कम से कम उतने ही कर्म पुनः बंध जाते हैं; लेकिन सम्यग्दृष्टि को कर्म नहीं बंधते हैं; इसलिए सम्यग्दृष्टि को निर्जरा है एवं मिथ्यादृष्टि को निर्जरा नहीं है।

ऐसे ही आस्रव के संबंध में आस्रवाधिकार में कहा गया है। वहाँ यह कहा है कि सम्यग्दृष्टि को बंध नहीं होता, आस्रव नहीं होता; परंतु मिथ्यादृष्टि के आस्रव–बंध होता है। निर्जराधिकार में भी यही कह रहे हैं।

आस्रवाधिकार जैसी ही विषवस्तु निर्जराधिकार में है; लेकिन यहाँ सबसे बड़ा अंतर यह है कि आस्रवाधिकार में विषयवस्तु की नकारात्मक प्रस्तुति थी; जबकि निर्जराधिकार में विषयवस्तु की सकारात्मक प्रस्तुति है। वहाँ कर्म का आस्रव नहीं होता, बंध नहीं होता; इसके संदर्भ में कथन था। जबकि यहाँ कर्म के खिरने की बात है।

मिथ्यादृष्टि के जितने कर्म खिरते हैं। उतने ही पुनः बंधते हैं; अतः मिथ्यादृष्टि के उन कर्मों का खिरना व्यर्थ ही रहा।

किसी चीज को आपने एक हजार रुपये में खरीदी और पन्द्रह सौ रुपये में बेच दी। अब जो 500 रु॰ लाभ हुआ, वह मजदूरी एवं ब्याज में ही खर्च हो गये तो क्या इसे कोई लाभ मानेगा। कथन में तो 500 रु॰ लाभ हुआ; लेकिन वस्तुतः कुछ भी लाभ नहीं हुआ है।

ऐसे ही मिथ्यादृष्टि के जितने कर्म खिरे, उतने ही कर्म बंध गए। अतः उन कर्मों का खिरना वस्तुतः कुछ लाभप्रद रहा ही नहीं।

सम्यग्दृष्टि के जितने कर्म खिरे, उतने बंधे नहीं। ये जितने और उतने का हिसाब प्रदेशबंध से नहीं जोड़ना चाहिए; क्योंकि प्रदेशबंध का यह नियम है कि एक समयप्रबद्ध प्रमाण कर्म प्रति समय खिरते हैं और एक समयप्रबद्ध प्रमाण ही बंधते हैं। सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि दोनों के ही ऐसा होता है।

प्रदेशों की संख्या कम बंधे या अधिक बंधे – इससे कोई अंतर आनेवाला नहीं है। आचार्य तो उन मिथ्यात्वादि अत्यन्त खतरनाक कर्मों के बंध का निषेध कर रहे हैं। अनन्त संसार की कारणभूत मिथ्यात्व और अनन्तानुबंधी आदि प्रकृतियाँ नहीं बंधी और सत्ता में हों तो खिर गईं। वह भोगने का भाव एवं कर्म का उदय जो भोगने के भाव में निमित्त था – दोनों ही खिर गये; इसतरह द्रव्यनिर्जरा एवं भावनिर्जरा दोनों हुई। इसे ही आचार्य द्रव्यनिर्जरा एवं भावनिर्जरा का स्वरूप कहते हैं।

भोगों को भोगते हुए भी ज्ञानी को कर्मबंध नहीं होता – इसका कारण बताते हुए आचार्य कहते हैं –

(अनुष्टुप)

तज्ज्ञानस्यैवसामर्थ्यं विरागस्यैव वा किल।
यत्कोऽपिकर्मभिः कर्म भुंजानोऽपि न बध्यते।।134।।

(हरिगीत)

ज्ञानी बंधे ना कर्म से सब कर्म करते भोगते।
यह ज्ञान की सामर्थ्य अर वैराग्य का बल जानिये।।134।।

यह एकमात्र ज्ञान और वैराग्य की ही सामर्थ्य है कि ज्ञानी कर्मों को करते हुए और उनके फल को भोगते हुए भी कर्मों से बंधता नहीं है।

सम्यग्दृष्टि के ज्ञान और वैराग्य के कारण ही उन्हें भोग भोगते हुए भी कर्मों का बंध नहीं होता, निर्जरा होती है।

ज्ञान की सामर्थ्य और वैराग्य के बल को सोदाहरण समझाते हुए आचार्य कुन्दकुन्द स्वयं ही लिखते हैं –

जह विसमुवभुंजंतो वेज्जो पुरिसो ण मरणमुवयादि।
पोग्गलकम्मस्सुदयं तह भुंजदि णेव बज्झदे णाणी।।195।।
जह मज्जं पिबमाणो अरदीभावेण मज्जदि ण पुरिसो।
दव्वुवभोगे अरदो णाणी वि ण बज्झदि तहेव।।196।।

(हरिगीत)

ज्यों वैद्यजन मरते नहीं है जहर के उपभोग से।
त्यों ज्ञानिजन बंधते नहीं है कर्म के उपभोग से।।195।।
ज्यों अरुचिपूर्वक मद्य पीकर मत्तजन होते नहीं।
त्यों अरुचि से उपभोग करते ज्ञानिजन बँधते नहीं।।196।।

आचार्य कहते हैं कि जिसप्रकार वैद्य पुरुष विष को खाते हुए भी मरता नहीं है; उसीप्रकार सम्यग्दृष्टि ज्ञानी धर्मात्मा भोगों को भोगते हुए भी बंधता नहीं है एवं जिसप्रकार अरतिभाव से शराब पीनेवाले को नशा नहीं चढ़ता है; उसीप्रकार वैराग्यभाव से भोग भोगनेवाले को बंध नहीं होता है, निर्जरा होती है।

(क्रमशः)

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

शाकाहार – मांसाहार की पहिचान कैसे करें ?

भारत सरकार ने फुड अॅण्ड अउल्ट्रेशन एक्ट के अन्तर्गत सभी पैकेज्ड खाद्य पदार्थों पर यह अंकित करना अनिवार्य कर दिया है कि वह शाकाहारी हैं या मांसाहारी है या मांसाहार खाद्य पदार्थों के मिश्रण से बना हुआ है।

सिर्फ शाकाहारी खाद्यपदार्थों के मिश्रण से बने हुये खाद्यपदार्थों पर हरे रंग (Green Colour) में (●)चिन्ह इंगित करना अनिवार्य कर दिया है।

सिर्फ मांसाहारी पदार्थों से बने हुये पेकेट पर भूरे रंग (Brown colour) में (●) चिन्ह इंगित करना अनिवार्य कर दिया है।

मांसाहारी व शाकाहारी दोनों खाद्य पदार्थों के मिश्रण से बनी खाद्य वस्तुओं के पेकेट पर लाल रंग (Red colour) में (⦸) चिन्ह इंगित करना अनिवार्य कर दिया है।

इस नियम का उल्लंघन करनेवालों पर उचित कार्यवाही कानून के अन्तर्गत की जा सकती है। आप पेकबंद खाद्यपदार्थ जैसे – बिस्कुट, चाकलेट आदि की खरीद करते समय उपर्युक्त चिन्हों को देखकर खरीदें। यदि चिन्ह अंकित न हो तो खरीदी हुई दुकान का बिल व खरीदी गई वस्तु का रेपर अथवा जिस दुकान से खरीद की गई है उसका पता व तारीख हमें निम्नांकित पते पर भेजें। हम आगे की कार्यवाही करेंगे।

पता – जयमल जैन जीवरक्षा पर्यावरण सुरक्षा फाउन्डेशन, नं.11, पोन्नप्पलेन, ट्रिप्लीकेन, चेन्नई – 600 005 (तमिल)

निबंध प्रतियोगिता

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा मौ द्वारा अभिनव निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया है। निबंध का विषय – 'जैनत्व की पहिचान खोते समाज के प्रति हमारा दायित्व' रखा गया है।

ध्यान रखें :– 1. प्रविष्टि स्पष्ट लेखन में या टंकण मुद्रित होना चाहिये। **2.** अपनी अभिव्यक्ति विषय वस्तु पर अधिकार पूर्वक न्यूनतम 1500 शब्दों में होना चाहिये। **3.** प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तिथि 31 जनवरी 03 रखी गई है। **4.** निर्णायक मण्डल का निर्णय सर्वमान्य होगा।

विशेष :– 1. प्रोत्साहन राशि क्रमश: 501, 301, 201 एवं सांत्वना पुरस्कार। **2.** सर्व श्रेष्ठ निबंधों को विशिष्ट पत्रिकाओं में प्रकाशित किया जायेगा।

निबंध भेजने का पता – शुद्धात्मप्रकाश शास्त्री, द्वारा – मैसर्स परिणति गारमेन्टस, मौ–भिण्ड (म.प्र.) 477222, फोन – 07539–285310

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

होशंगाबाद	: 1 से 4 दिसम्बर 2002	तारण जयन्ती
भायंदर	: 21 से 22 दिसम्बर 2002	शिलान्यास
देवलाली	: 24 से 30 दिसम्बर 2002	विधान–शिविर
ग्वालियर	: 13 से 19 जनवरी 2003	पंचकल्याणक
अलीगढ़	: 31 जनवरी से 6 फरवरी 2003	पंचकल्याणक

दिसम्बर माह में आनेवाली 24 तीर्थंकरों के पंचकल्याणकों की तिथियाँ

5 दिसम्बर	–	भगवान पुष्पदन्त का जन्म एवं तप कल्याणक
14 दिसम्बर	–	भगवान अरनाथ का तपकल्याणक
15 दिसम्बर	–	भगवान मल्लिनाथ का जन्म एवं तप कल्याणक तथा भगवान नमिनाथ ज्ञान कल्याणक
18 दिसम्बर	–	भगवान अरनाथ का जन्मकल्याणक
19 दिसम्बर	–	भगवान संभवनाथ का तपकल्याणक
21 दिसम्बर	–	भगवान मल्लिनाथ का ज्ञानकल्याणक
30 दिसम्बर	–	भगवान चन्द्रप्रभ का जन्म एवं तप कल्याणक भगवान पार्श्वनाथ का जन्म एवं तप कल्याणक

ब्र. यशपालजी द्वारा धर्म प्रभावना

पिड़ावा : यहाँ पर समाज के विशेष आग्रह पर जयपुर से पधारे ब्र. यशपालजी के प्रात: एवं रात्रि दोनों समय छहढाला की पाँचवी ढाल पर मार्मिक प्रवचन हुये, जिससे समाज में अपूर्व जाग्रति आई। साथ ही जयपुर से पधारी विदुषी ब्र. विमलाबेन जबलपुर के दोपहर में नंदीश्वर पूजन की जयमाला पर तथा रात्रि में विदेह क्षेत्र के वज्रदन्त चक्रवर्ती के बारह मासा एवं मुनियों के 22 परीषहों पर मार्मिक प्रवचन हुये। इसी बीच निवृत्त अध्यापक अमोलकचन्दजी जैन के द्वारा नन्दीश्वर विधान रखा गया। सम्पूर्ण विधि–विधान के कार्य स्थानीय विद्वान पण्डित धनसिंहजी 'ज्ञायक' तथा पण्डित चेतनकुमारजी शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

इसी अवसर पर ब्र. यशपालजी द्वारा चलाई जानेवाली कण्ठपाठ प्रतियोगिता का समाज के अनेक लोगों ने लाभ लिया। इसके अन्तर्गत सभी लोगों ने कुन्दकुन्द शतक, छहढाला, भक्तामर स्तोत्र आदि अनेक विषयों को कण्ठस्थ कर सुनाया। कण्ठपाठ सुनाने वाले सभी मुमुक्षुओं को पुरस्कृत किया गया।

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) दिसम्बर (प्रथम) 2002
आई. आर. / R. J. 3002/02

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा जयपुर**, एम.ए. (जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्मदर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए–4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें –
ए– 4 बापूनगर, जयपुर – 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127